श्रीगणेशाय नमः
श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीसरस्वत्यर्चन सर्वस्वम्

राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा । सरसइ ब्रह्म बिचार प्रचारा ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीसरस्वत्यर्चन सर्वस्वम्

लेखक- हृतिक मिश्र

श्रीराघव ग्रन्थमालाया: चतुर्थ पुष्पं

मङ्गलाचरण

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि । मङ्गलानां च कर्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥

सरस्वतीं च तां नौमि वागधिष्ठातृदेवताम् । देवत्वं प्रतिपद्यन्ते यदनुग्रहतो जनाः ॥

भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ। याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तः स्थमीश्वरम् ॥

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम् । यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥

सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ । वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् । सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥

यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः ।

यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥

बंदउँ नाम राम रघुबर को । हेतु कृसानु भानु हिमकर को ॥

बिधि हरि हरमय बेद प्रान सो। अगुन अनूपम गुन निधान सो ॥

महामंत्र जोइ जपत महेसू । कासीं मुकुति हेतु उपदेसू ॥

महिमा जासु जान गनराऊ । प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ ॥

जान आदिकबि नाम प्रतापू । भयउ सुद्ध करि उलटा जापू ॥

सहस नाम सम सुनि सिव बानी । जपि जेईं पिय संग भवानी ॥

हरषे हेतु हेरि हर ही को। किय भूषन तिय भूषन ती को ॥

नाम प्रभाउ जान सिव नीको । कालकूट फलु दीन्ह अमी को ॥

श्रीरामनामाय नमः

॥ इति मङ्गलाचरण ॥

पुरोवाक्

लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय । निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

यया विना जगत्सर्वं शश्वज्जीवन्मृतं सदा । ज्ञानाधिदेवी या तस्यै सरस्वत्यै नमो नमः ॥

नमः परमहंसास्वादितचरणकमलचिन्मकरन्दायभक्तजनमानसनिवासाय श्रीरामचन्द्राय

भगवती सरस्वती साक्षात् आदिशक्ति जगदम्बा हैं, वे ही विद्या की अधिष्ठात्री देवी हैं, समग्र शास्त्र-समस्त विद्याएँ उनका ही स्वरूप हैं। उनके कृपा प्रसाद से ही प्राणी वेदादि शास्त्रों का ज्ञाता, मधुर भाषी, कवि तथा महाज्ञानी होता है। बिना उनकी कृपा के कोई व्यक्ति एक अक्षर के भी उच्चारण में समर्थ नही हो सकता। भगवती सरस्वती सदा मंगल करने वाली हैं, वे नदी स्वरूप से प्राणियों के देहों को शुद्ध करती हैं और विद्या रूप से प्राणियों के मनों को शुद्ध करती हैं तथा अपनी कृपा से जीवों को मोक्ष का अधिकारी बनाती हैं। इस प्रकार भगवती सरस्वती की महिमा अपार है, उनकी महिमा का पार शेष, महेश और गणेश भी नहीं पा सकते। इस प्रकार जो अपार महिमा वाली भगवती सरस्वती हैं यह ग्रन्थ उन्हीं की उपासना पद्धति के ऊपर उनकी ही कृपा से रचा गया है। आज हिंदुओं की बुद्धि अपवित्र हो चुकी है, उसमे राम के स्थान पर काम का वास हो चुका है, वह नित्य निरन्तर शिश्नोदर परायण रहती है, उसमे धर्म लेश मात्र भी नही बचा है। जिस कारण सनातनी पापों से लिप्त तथा अपने ही धर्म के विरोधी हो गए हैं। वे गौ, गंगा, विप्र तथा देवताओं के माहात्म्य को भुला चुके हैं, उन्हें बस अपने पेट भरने से मतलब है धर्म का ज्ञान उन्हें जरा भी नहीं। वे जो कुछ पूजा आदि करते भी हैं वह भी मनमानी ही न कि शास्त्रीय विधा से, जिसके फल स्वरूप उनका लोक तथा परलोक दोनो ही नष्ट प्राय: हो गया है। इस सबमें एक मुख्य कारण यह भी है कि हिंदुओं ने जो विद्या की, ज्ञान की तथा उत्तम बुद्धि की देने वाली हैं उन भगवती सरस्वती की उपासना-उनके पूजन को भुला दिया है, वसंत पंचमी पर भी आज भगवती का पूजन विद्यालयों में नाम मात्र का ही होता है, जबकि भगवती सरस्वती का पूजन तो प्रत्येक सनातनी को प्रतिदिन करना चाहिए। विशेषकर विद्यार्थी वर्ग को तो अवश्य करना चाहिए जिससे उनकी बुद्धि शुद्ध हो और उनकी बुद्धि में भगवती सरस्वती जी की कृपा से काम नही अपितु राम का वास हो। इसी

प्रकार प्रत्येक उपासक के लिए भी भगवती सरस्वती जी का पूजन करना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि कोई किन्ही भी देवी-देवता के उपासक क्यों न हो परन्तु उनकी उपासना के लिए उसे शुद्ध बुद्धि तो चाहिए ही और शुद्ध बुद्धि बिना सरस्वती माता की कृपा के कैसे प्राप्त हो सकती है ? अतः सरस्वती देवी की उपासना सभी के लिए अत्यन्त आवश्यक है। अतः ताकि समस्त भक्त जन भगवती माता श्रीसरस्वती जी की उचित विधा से उपासना करके उनकी कृपा प्राप्त कर सकें इसलिए भगवती सरस्वती जी की ही प्रेरणा तथा उनकी ही कृपा से इस ग्रन्थ की रचना हुई है। इस ग्रन्थ में भगवती सरस्वती जी की पूजन पद्धति, उनके कुछ स्तोत्र तथा अन्य भी उपयोगी विषयों का वर्णन करा गया है। इसमें वर्णित पूजन विधि के अनुसार भगवती का पूजन कर, स्तोत्रों के द्वारा उनका स्तवन कर तथा सारस्वतों के लिए जिन नियमों का पालन आवश्यक है उनका पालन कर भक्त जन भगवती सरस्वती जी की कृपा प्राप्त कर सकेंगे। जिसके फल स्वरूप उन्हें उत्तम बुद्धि प्राप्त होगी तथा उनमें भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और धर्म का उदय होगा जिससे उनका लोक तथा परलोक दोनो ही भगवती की कृपा से सुन्दर हो जाएगा। अब अन्त में भगवती माता श्रीसरस्वती जी से हमारी यही प्रार्थना है कि वे हम पर प्रसन्न होकर हम पर अपनी ऐसी कृपा करें कि उनकी कृपा से यह ग्रन्थ सभी भक्त जनों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो तथा वे इसमें वर्णित विधि के अनुसार भगवती सरस्वती जी की उपासना कर उत्तम बुद्धि, धर्म, ज्ञान, वैराग्य तथा अपने इष्टदेवता की भक्ति प्राप्त करें।। नारायण...

- हृतिक मिश्र

संवत् २०८२

ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी

सम्पर्क सूत्र- 8303317498

अनुक्रमणिका

॥ इति अनुक्रमणिका ॥

श्रीसरस्वती पूजन

पूजन पूर्व के कर्तव्य

सर्वप्रथम स्नान करके बिना सिले वस्त्र धारण कर जल से अपने चरण धोकर पूजन कक्ष में प्रवेश करे। तत्पश्चात् पूजा की सभी सामग्रियों को यथास्थान रखकर कुश अथवा ऊन के आसन पर पद्मासन, सिद्धासन अथवा सुखासन द्वारा बैठकर निम्न मन्त्र से शिखा बाँध ले :

"चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे"

कभी भी बिना आसन पर बैठे पूजन न करे क्योंकि श्रीकालिका पुराण
के अनुसार व्यक्ति को कभी भी खड़े रहकर पूजन नही करना चाहिए।

निम्न मन्त्र उच्चारित कर फिर आसन बिछाकर उसपर बैठना चाहिए :

विष्णुना त्वं धृता पृथ्वि ! सर्वे लोकास्त्वया धृता: ।
अतः सर्वं सहे देवि वस्तुं मे स्थानमुत्तमम् ॥

अब तीन कुशों से निर्मित पवित्री बाई अनामिका के तथा दो कुशों से निर्मित पवित्री दाहिनी अनामिका के मूल में धारण कर ले। यदि पवित्री उपलब्ध न हो सके तो स्वर्ण की अँगूठी धारण कर सकते हैं। फिर अपने दक्षिण हस्त में जल लेकर पवित्रीकरण मन्त्र उच्चारित करे :

पवित्रीकरण मन्त्र-

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

अब अपनी मध्यमा तथा अनामिका अँगुली के द्वारा उस जल को **पुण्डरीकाक्ष पुनातुः, पुण्डरीकाक्ष पुनातुः, पुण्डरीकाक्ष पुनातुः** इन मन्त्रों का एक-एक बार उच्चारण करते हुए कुल तीन बार अपने ऊपर तथा पूजन सामग्री पर छिड़क ले।

अब निम्न मन्त्रों के द्वारा 3 बार आचमन करे :

केशवाय नमः । नारायणाय नमः । माधवाय नमः ।

अब **"गोविंदाय नमः"** इस मन्त्र का उच्चारण कर अँगूठे के मूल भाग के द्वारा ओष्ठों को दो बार पोंछ ले तत्पश्चात् **"हृषीकेशाय नमः"** मन्त्र के द्वारा हस्त प्रक्षालन करके फिर अपने दक्षिण अंगुष्ठ के द्वारा अपनी नाक, अपने नेत्रों तथा अन्त में अपने दोनों कर्णों का स्पर्श करे।

अब हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग पढ़कर जल छोड़ दे-

पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता आसनपवित्रकरणे विनियोगः ॥

आसन शुद्धिकरण-

अब दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करे तत्पश्चात्
उस जल को अंगुलियों के मध्य के छिद्रों से आसन पर छिड़के :

पृथ्वि ! त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

प्राणायाम-

अब मन में माता सरस्वती जी के दिव्य स्वरूप का ध्यान करते हुए तीन प्राणायाम करे ॥

अब निम्न वर्णित मन्त्रों से देवताओं को नमस्कार करके गणेश स्मरण तथा विष्णु स्मरण करे-

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः ।

श्रीवाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । श्रीशचीपुरन्दराभ्यां नमः ।

श्रीमातापितृचरणकमलेभ्यो नमः । श्रीइष्टदेवताभ्यो नमः। श्रीकुलदेवताभ्यो नमः ।

श्रीग्रामदेवताभ्यो नमः। श्रीवास्तुदेवताभ्यो नमः। श्रीस्थानदेवताभ्यो नमः ।

सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वाभ्यो देवीभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ।

एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः । सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ॥

श्रीगणेश स्मरण-

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । सङ्ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥

श्रीविष्णु स्मरण-

श्रीविष्णवे नमः, श्रीविष्णवे नमः, श्रीविष्णवे नमः ।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

श्रीविष्णवे नमस्तुभ्यम् ॥

सङ्कल्प-

अब हाथ में जल, पुष्प तथा अक्षत लेकर पूजन का सङ्कल्प करे क्योंकि सङ्कल्प विहीन पूजन निष्फल होता है। अगर बस भगवती माता श्रीसरस्वती जी की प्रसन्नता के लिए ही पूजन करना है तो निष्काम संकल्प और अगर सांसारिक सुखों की प्राप्ति की इच्छा है तो उपासक को सकाम संकल्प करना चाहिए। पूजन का संकल्प कर लेने के बाद उपासक को अपने हाथ में लिए हुए जल, पुष्प तथा अक्षतों को किसी पात्र में छोड़ देना चाहिए ॥

निष्काम सङ्कल्प-

विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीय-परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे ..नगरे / ग्रामे / क्षेत्रे[1] ..नामसंवत्सरे[2] ..मासे[3] शुक्ल / कृष्णपक्षे ..तिथौ[4] ..वासरे[5] ..गोत्रः[6] ..शर्माऽहं /वर्माऽहं /गुप्तोऽहं/ दासोऽहं/देवीदाऽहम्/दासीदाऽहम्[7] श्रीसरस्वतीप्रीत्यर्थं श्रीसरस्वतीपूजनं करिष्ये ।”

सकाम सङ्कल्प-

शर्माऽहं आदि तक पूर्ववत् बोलकर फिर आगे लिखे को बोले **“मम आत्मनः सपरिवारस्य सकुटुम्बस्य ज्ञाताज्ञातसकलपापक्षयार्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं क्षेमस्थैर्यायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं आधिदैविकाधिभौतिकाध्यात्मिकत्रिविधतापोपशमनार्थं इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुरितोपशमनार्थं धर्मार्थकाममोक्षफलप्राप्त्यर्थं नित्यकल्याणलाभाय श्रीसरस्वतीप्रीत्यर्थं च श्रीसरस्वतीपूजनं करिष्ये ।”**

पुनः हाथ में जल ग्रहण कर निम्न संकल्प करे :

तत्रादौ दिग्रक्षणं कलशार्चनं दीपशंखघंटापूजनं श्रीगणेश पूजनं च करिष्ये ।

---

1. यदि किसी तीर्थ में पूजन कर रहे हों तो उस तीर्थ का नाम, नगर में हों तो उस नगर का नाम और गाँव में हो तो उस गाँव का नाम उच्चारित करे ।

2. जो संवत्सर चल रहा हो उसका नाम बोले ।

3. चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष,

माघ, फाल्गुन । इनमें से जो भी मास चल रहा हो उसका नाम उच्चारित करे।

4. प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावास्या तथा पूर्णिमा । इनमें से जो भी तिथि चल रही हो उसका नाम बोले।

5. रवि, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि । इनमें से जो भी दिन हो उसका नाम उच्चारित करे ।

6. अपने गोत्र का उच्चारण करे।

7. ब्राह्मण अपने नाम के अन्त में शर्मा, क्षत्रिय वर्मा, वैश्य गुप्त तथा शूद्र दास बोलें। ऐसे ही ब्राह्मण तथा क्षत्रिय वर्ण की स्त्रियाँ देवीदाऽहम् तथा वैश्य और शूद्र वर्ण की स्त्रियाँ दासीदाऽहम् बोलें॥

दिग्रक्षण-

बाएँ हाथ में पीली सरसों लेकर उसे दाएं हाथ से
आच्छादित करके आगे वर्णित मन्त्रों का पाठ करे :

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् । सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे ॥

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः । स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥

भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः । ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु पूजाकर्म करोम्यहम् ॥

अब उस अभिमन्त्रित सरसों को सभी दिशाओं में छिड़ककर तीन बार बाईं एड़ी द्वारा पृथ्वी का ताड़न करे फिर वाम हस्त में जल लेकर दाहिनी अनामिका द्वारा उसका नेत्रों से स्पर्श कराए ॥

श्री भैरव नमस्कार-

अब निम्न मन्त्र से भैरव जी को नमस्कार कर उनसे पूजन करने की आज्ञा माँगे :

तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम । भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥

कलशार्चन-

**अब अपने वाम भाग में स्थापित करे हुए कलश में निम्न वर्णित मन्त्र से
वरुण देव का आवाहन कर उनका पूजन करे तत्पश्चात् उन्हें नमस्कार करे।**

**मकरस्थं पाशहस्तमम्भसां पतिमीश्वरम् । आवाहये प्रतीचीशं वरुणं यादसां पतिम् ॥
अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि ।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ॥**

अब दक्षिण हस्त में जल लेकर **अनेन पूजनेन वरुणः प्रीयतां** यह उच्चारित कर जल छोड़ दे।

**अब दक्षिण हस्त की अनामिका अंगुली के द्वारा कलश का स्पर्श करते
हुए आगे वर्णित मन्त्रों के द्वारा कलश में तीर्थों आदि का आवाहन करे :**

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा । ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥

अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः । अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः । आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ! नर्मदे सिन्धो कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे। तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥

अब अक्षत-पुष्पों से निम्न वर्णित विधि के अनुसार पूजन करे :

पूर्वे ऋग्वेदाय नमः, दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः, पश्चिमे सामवेदाय नमः,

उत्तरे अथर्वणवेदाय नमः, कलशमध्ये अपाम्पतये वरुणाय नमः ॥

निम्न मन्त्र से सभी आवाहित देवताओं आदि का पूजन कर उन्हें नमस्कार करे :

गायत्र्यादिभ्यो नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ॥

अब निम्नलिखित मन्त्रों का पाठ कर प्रार्थना करे :

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ । उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ ! विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।

त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥

शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः। आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः । त्वत्प्रसादादिमं पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव !

सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥

अब कुम्भ मुद्रा का प्रदर्शन करे तत्पश्चात् प्रोक्षण करे।

प्रोक्षण-

अब कलश के जल को निम्न मन्त्र का उच्चारण कर कुश के द्वारा
तीन बार अपने ऊपर, पूजन सामग्री पर तथा धरती पर छिड़के।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

दीप प्रज्वलन तथा पूजन-

अब गणपति का स्मरण कर एक दीपक अगर घी का हो तो अपने दाहिनी ओर और तेल का हो तो बाईं ओर किसी आधार पर रख प्रज्वलित करके निम्न मंत्र से दीपस्थ देव की पूजा करे :

दीपस्थदेवतायै नमः । आवाहयामि, सर्वोपचारार्थे
गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ॥

अब निम्न मन्त्र के द्वारा दीप की प्रार्थना करे :

भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् । यावत्पूजासमाप्तिः स्यात्तावदत्र स्थिरो भव ॥

दक्षिण हस्त में जल लेकर **अनेन पूजनेन दीपः प्रीयतां** यह उच्चारित कर जल छोड़ दे।

शङ्ख पूजन-

शङ्ख में चन्दन, दूर्वा, तुलसी तथा पुष्प डालकर उसे पवित्र जल के द्वारा भर दे।
इसके बाद निम्न मन्त्र का उच्चारण कर शङ्ख में तीर्थों का आवाहन करे :

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ! नर्मदे सिन्धो कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

अब निम्न मन्त्रों से शङ्खस्थ देवता का पूजन करके उन्हे नमस्कार करे :

शङ्खं चन्द्रार्कदैवत्यं वरुणं चाधिदैवतम् । पृष्ठे प्रजापतिं विद्यादग्रे गङ्गा सरस्वती ॥

त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया ।

शङ्खे तिष्ठन्ति वै नित्यं तस्माच्छङ्खं प्रपूजयेत् ॥

शङ्खस्थ देवतायै नमः। आवाहयामि, सर्वोपचारार्थे

गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ॥

अब निम्न मन्त्र से प्रार्थना करे :

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृत: करे । नमितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य ! नमोऽस्तु ते ॥

अब दक्षिण हस्त में जल लेकर **अनेन पूजनेन शङ्खः प्रीयतां** यह उच्चारित कर जल छोड़ दे।

घण्टा पूजन-

अब निम्न मन्त्र के द्वारा घण्टे की प्रार्थना करे तत्पश्चात्
घण्टे का वादन कर उसे उसके स्थान पर स्थापित कर दे :

सर्ववाद्यमयीघण्टायै नमः ॥

आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम् । कुरु घण्टे वरं नादं देवतास्थानसन्निधौ ॥

अब निम्न मन्त्र से गरुड़ जी का आवाहन कर उनका
पूजन कर उन्हें नमस्कार करके गरुड़ मुद्रा प्रदर्शित करे।

घण्टास्थ गरुडाय नमः । आवाहयामि, सर्वोपचारार्थे
गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ॥

अब दक्षिण हस्त में जल लेकर **अनेन पूजनेन घण्टास्थ गरुड: प्रीयतां** यह उच्चारित कर जल छोड़ दे तत्पश्चात् निम्न वर्णित विधि से आत्म पूजा करे तत्पश्चात् श्रीगणेश पूजन सम्पन्न करे।

आत्मपूजा-

अब हाथ में अक्षत लेकर निम्न मन्त्र का उच्चारण कर उन अक्षतों को स्वयं पर छोड़े :

देहो देवालयः प्रोक्तः जीवो देवः सनातनः । त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहंभावेन पूजयेत् ॥
आत्मने नमः । आत्मपूजां समर्पयामि ॥

॥ इति श्री ॥

श्रीगणेश पूजन

ध्यान-

खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं
प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम् ।
दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूर शोभाकरं
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्॥
सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः । ध्यायामि, ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से गणेश जी का ध्यान कर एक पुष्प अर्पित करे।

आवाहन-

एह्येहि हेरम्ब महेशपुत्र समस्तविघ्नौघविनाशदक्ष।
माङ्गल्यपूजाप्रथमप्रधान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते॥
सिद्धिबुद्धिसहितं श्रीगणेशमावाहयामि। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से गणेश जी का आवाहन कर एक पुष्प अर्पित करे।

आसन-

विचित्ररत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम् । स्वर्णसिंहासनं चारु गृह्णीष्व सुरपूजित ! ॥
सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः । आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि॥

आसन के लिए पाँच पुष्प समर्पित करे।

चन्दन-

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥
सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः। चन्दनं समर्पयामि ॥

पुष्प तथा पुष्पमाला-

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः। पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि ॥

दूर्वा-

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक ॥
सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः। दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि॥

सिन्दूर-

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥
सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः। सिन्दूरं समर्पयामि ॥

धूप-

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥
सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः। धूपमाघ्रापयामि ॥

दीप-

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥
सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः। दीपं दर्शयामि ॥

प्रभु के आगे 5 या 7 बार दिया घुमाकर उन्हे दीप दिखाए फिर अगर दिया घी का है तो प्रभु के दाई ओर और अगर तेल का है तो बाई ओर रख दे और फिर जल से अपने हाथ धुल ले॥

नैवेद्य-

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च। आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥
सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः। नैवेद्यं निवेदयामि पानीय जलं च समर्पयामि ॥

प्रभु को नैवेद्य निवेदित कर उनके पीने के लिए जल समर्पित करे ॥

॥ इति श्रीगणेश पूजन विधि ॥

श्रीसरस्वती मानसिक पूजन

ध्यान-

दोर्भिर्युक्ताश्चतुर्भिः स्फटिकमणिमयीमक्षमालां दधाना

हस्तेनैकेन पद्मं सितमपि च शुकं पुस्तकं चापरेण ।

या सा कुन्देन्दुशङ्खस्फटिकमणिनिभा भासमाना समाना

सा मे वाग्देवतेयं निवसतु वदने सर्वदा सुप्रसन्ना ॥

जो चार हाथों से सुशोभित हैं और उन हाथों में स्फटिकमणि की बनी हुई अक्षमाला, श्वेत कमल, शुक तथा पुस्तक धारण किये हुई हैं। जो कुन्द, चन्द्रमा, शंख और स्फटिकमणि के सदृश देदीप्यमान होती हुई इनके समान उज्ज्वलवर्णा हैं, वे ही ये वाग्देवता जगदम्बा भगवती श्रीसरस्वती जी परम प्रसन्न होकर सर्वदा मेरे मुख में निवास करें ॥

श्रीसरस्वत्यै लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि ।

श्रीसरस्वत्यै हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि ।

श्रीसरस्वत्यै यं वाय्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि ।

श्रीसरस्वत्यै रं वह्नयात्मकं दीपं परिकल्पयामि ।

श्रीसरस्वत्यै वं अमृतात्मकं नैवेद्यं परिकल्पयामि ।

श्रीसरस्वत्यै सर्वात्मकं नमस्कारान् परिकल्पयामि ॥

॥ इति श्रीसरस्वती मानसिक पूजन विधि ॥

श्रीसरस्वती पूजन

ध्यान-

सरस्वतीं शुक्लवर्णां सस्मितां सुमनोहराम्। कोटिचन्द्रप्रभाजुष्टपुष्ट श्रीयुक्तविग्रहाम्॥

वह्निशुद्धांशुकाधानां सस्मितां सुमनोहराम्। रत्नसारेन्द्रखचितवरभूषणभूषिताम्॥

सुपूजितां सुरगणैर्ब्रह्मविष्णुशिवादिभिः। वन्दे भक्त्या वन्दितां तां मुनीन्द्रमनुमानवैः ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । ध्यायामि, ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥

जगदम्बा भगवती माता श्रीसरस्वती जी शुक्लवर्णा, मनोहारिणी मुस्कान से युक्त हैं। वे करोड़ों चन्द्रमा की प्रभा के समान प्रभा सम्पन्ना हैं। वे अग्नि के समान शुद्ध वस्त्र धारण करने वाली, हंसती हुई अत्यन्त मनोहारिणी लग रही हैं। वे उत्तम रत्नों से बने श्रेष्ठ आभूषणों से विभूषिता हैं। ब्रह्मा-विष्णु-शिव आदि देवता सतत् उनकी पूजा करते हैं। मुनिगण, मनुगण तथा मनुष्यगण उनका निरन्तर स्तव करते हैं। मैं उनकी वन्दना भक्तिभाव से करता हूं॥

आवाहन-

आगच्छ त्वं महादेवि ! स्थाने चात्र स्थिरा भव।

यावत् पूजां करिष्यामि तावत् त्वं सन्निधौ भव ॥

श्रीसरस्वतीमावाहयामि। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि॥

आसन-

दारुसारविकारं च हेमादिनिर्मितं च वा। देवाधारं पुण्यदं च मया तुभ्यं निवेदितम्॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि ॥

पाद्य-

तीर्थोदकं च पाद्यं च पुण्यदं प्रीतिदं महत्। पूजाङ्गभूतं शुद्धं च मया भक्त्या निवेदितम् ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । पाद्यं समर्पयामि ॥

अर्घ्य-

पवित्ररूपमर्घ्यं च दूर्वापुष्पाक्षतान्वितम्। पुण्यदं शङ्खतोयाक्तं मया तुभ्यं निवेदितम्॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । अर्घ्यं समर्पयामि ॥

आचमन-

शुद्धं शुद्धिप्रदं चैव पुण्यदं प्रीतिदं महत्। रम्यमाचमनीयं च मया दत्तं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । आचमनं समर्पयामि ॥

मधुपर्क-

माध्वीकं रत्नपात्रस्थं सुपवित्रं सुमङ्गलम्। मधुपर्कं महादेवि गृह्यतां प्रीतिपूर्वकम्।॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । मधुपर्कं समर्पयामि, आचमनं च समर्पयामि॥

स्नान-

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्। तदिदं कल्पितं देवि ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । स्नानं समर्पयामि ॥

वस्त्र-

देहशोभास्वरूपं च सभाशोभाविवर्धनम्। कार्पासजं च कृमिजं वसनं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । वस्त्रं समर्पयामि ॥

उपवस्त्र-

यस्याभावेन शास्त्रोक्तं कर्म किञ्चिन्न सिध्यति । उपवस्त्रं प्रयच्छामि सर्वकर्मोपकारकम् ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । उपवस्त्रं समर्पयामि ॥

अब माता सरस्वती जी को आभूषण अर्पित करे।

आभूषण-

काञ्चनादिभिराबद्धं श्रीयुक्तं श्रीकरं सदा। सुखदं पुण्यदं चैव भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । आभरणानि समर्पयामि ॥

सौभाग्यसूत्र-

सौभाग्यसूत्रं वरदे सुवर्णमणिसंयुतम् । कण्ठे बध्नामि देवेशि सौभाग्यं देहि मे सदा ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । सौभाग्यसूत्रं समर्पयामि॥

गन्ध-

सर्वमङ्गलरूपश्च सर्वमङ्गलदो वरः। पुण्यप्रदश्च गन्धाढ्यो गन्धश्च प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । गन्धं समर्पयामि॥

हरिद्राचूर्ण-

हरिद्रारञ्जिते देवि ! सुखसौभाग्यदायिनि। तस्मात् त्वां पूजयाम्यत्र सुखं शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । हरिद्रां समर्पयामि॥

कुङ्कुम-

कुङ्कुमं कामदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम्। कुङ्कुमेनार्चिता देवी कुङ्कुमं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । कुङ्कुमं समर्पयामि॥

अक्षत-

अक्षतांश्च सुरेश्रेष्ठे कुंकुमाक्तान् सुशोभितान्। मया निवेदितान् भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । अक्षतान् समर्पयामि ॥

अब देवी को सिन्दूर अर्पित करे।

सिन्दूर-

सिन्दूरं च वरं रम्यं भालशोभाविवर्धनम्। भूषणं भूषणानां च सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । सिन्दूरं समर्पयामि॥

काजल-

चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्तिकारकम् । कर्पूरज्योतिसमुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । कज्जलं समर्पयामि॥

पुष्प-

पारिजातप्रसूनं च गन्धचन्दनचर्चितम्। अतीव शोभनं रम्यं गृह्यतां परमेश्वरि॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । पुष्पं समर्पयामि॥

पुष्पमाला-

नानापुष्पलताकीर्णं बहुभासा समन्वितम्। प्रीतिदं पुण्यदं चैव माल्यं वै प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । पुष्पमालां समर्पयामि॥

नानापरिमलद्रव्य-

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम् । नानापरिमलद्रव्यं गृहाण परमेश्वरि ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि॥

सुगन्धित तेल तथा इत्र-

जननि चम्पकतैलमिदं पुरो मृगमदोऽयमयं पटवासकः ।

सुरभिगन्धमिदं च चतुःसमं सपदि सर्वमिदं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । सुगन्धि द्रव्यं समर्पयामि॥

सौभाग्यपेटिका-

हरिद्रां कुङ्कुमं चैव सिन्दूरादिसमन्विताम् । सौभाग्यपेटिकामेतां गृहाण परमेश्वरि ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । सौभाग्यपेटिकां समर्पयामि॥

धूप-

गन्धद्रव्योद्भवः पुण्यः प्रीतिदो दिव्यगन्धदः ।

मया निवेदितो भक्त्या धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । धूपमाघ्रापयामि ॥

दीप-

जगतां दर्शनीयं च दर्शनं दीप्तिकारणम्। अन्धकारध्वंसबीजं मया तुभ्यं निवेदितम् ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । दीपं दर्शयामि ॥

नैवेद्य-

तुष्टिदं पुष्टिदं चैव प्रीतिदं क्षुद्विनाशनम्। पुण्यदं स्वादुरूपं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । नैवेद्यं निवेदयामि ॥

कुलद्वयदूष्यता रहित स्वशाखासूत्र से उपनीत शौचाचार सम्पन्न त्रैवर्णिक गृहस्थ द्विज ही जलाग्नि संयोग से निर्मित विविध प्रकार के पक्वान्न स्वयंपाकविधा से बनाकर किसी भी देवता को भोग लगाने में संध्यादि नित्य कर्मों को करने के उपरान्त वैश्वदेव करने के बाद अधिकारी हैं। अन्य जन किसी भी देवता को जल के बदले में नारियल जल , कदलीजल का उपयोग करने और केवल दुग्ध-घृत आदि सम्मिश्रकर बिना नमक के कच्चे या घृतपक्व पदार्थ (तेल में पका नही), शाक ,फल, बादाम, पिस्ता, काजू, मुनक्का आदि सूखे फल, गुड, शक्कर और कच्चे अन्न का ही भोग लगाने में ही अधिकृत हैं।

(सप्तशतीसर्वस्व-पृष्ठ ३५६ (अन्य संस्करणे ५११) खिलमार्कण्डेयोक्तः चण्डिकाराधनक्रम)

पूर्वापोशानादि-

श्रीसरस्वत्यै नमः । पूर्वापोशानं समर्पयामि। मध्ये पानीयं समर्पयामि।

उत्तरापोशानं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थं जलं समर्पयामि।

मुखप्रक्षालनार्थं जलं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि॥

पूर्वापोशानादि के लिए देवी को पृथक-पृथक जल अर्पित करे, तत्पश्चात् माता सरस्वती को करोद्वर्तन के लिए चन्दन अर्पित करे।

करोद्वर्तन-

उष्णोदकै: पाणियुगं मुखं च प्रक्षाल्य मातः कलधौतपात्रे ।

कर्पूर मिश्रेण सकुंकुमेन हस्तौ समुद्वर्तय चन्दनेन ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि॥

फल-

इदं फलं मया देवि स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । फलं समर्पयामि॥

ताम्बूल-

गुवाकपर्णचूर्णं च कर्पूरादिसुवासितम्। सर्वभोगवरं रम्यं ताम्बूलं देवि गृह्यताम् ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । ताम्बूलं समर्पयामि॥

दक्षिणा-

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । दक्षिणां समर्पयामि॥

आरती-

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम् । आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मां वरदा भव ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । कर्पूरारार्तिक्यं समर्पयामि॥

पुष्पाञ्जलि-

श्रद्धया सिक्तया भक्त्या हार्दप्रेम्णा समर्पितः। मन्त्रपुष्पाञ्जलिश्चायं कृपया प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि॥

प्रदक्षिणा-

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । प्रदक्षिणां समर्पयामि॥

नमस्कार-

उरसा शिरसा दृष्टया मनसा वचसा तथा। पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां साष्टांगञ्च नमोस्तुते ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । नमस्कारान् समर्पयामि॥

प्रार्थना-

सरस्वतीं च तां नौमि वागधिष्ठातृदेवताम् । देवत्वं प्रतिपद्यन्ते यदनुग्रहतो जनाः ॥

ब्रह्मा जगत् सृजति पालयतीन्दिरेशः शम्भुर्विनाशयति देवि तव प्रभावैः ।

न स्यात्कृपा यदि तव प्रकटप्रभावे न स्युः कथञ्चिदपि ते निजकार्यदक्षाः ॥

लक्ष्मीर्मेधा धरा पुष्टिर्गौरी तुष्टिः प्रभा धृतिः। एताभिः पाहि तनुभिरष्टाभिर्मां सरस्वति॥

बुद्धिं देहि यशो देहि कवित्वं देहि देहि मे । मूढत्वं च हरेद्देवि त्राहि मां शरणागतम् ॥

जडानां जडतां हन्ति भक्तानां भक्तवत्सला । मूढतां हर मे देवि त्राहि मां शरणागतम् ॥

मोहान्धकारभरिते हृदये मदीये मातः सदैव कुरु वासमुदारभावे।

स्वीयाखिलावयवनिर्मलसुप्रभाभिः शीघ्रं विनाशय मनोगतमन्धकारम्॥

अब अपने इच्छा तथा अधिकार अनुसार जिन भी स्तोत्र आदि का पाठ करना हो वह कर ले।

क्षमा प्रार्थना-

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया। दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् । पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ॥

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्। तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि॥

समर्पण-

दक्षिण हस्त में जल लेकर "अनेन यथाज्ञानोपचारकृतेन पूजनेन भगवती श्रीसरस्वती प्रीयतां न मम" यह उच्चारित कर सकल पूजन कर्म देवी को अर्पित करके जल छोड़ दे।

पूर्णता की प्रार्थना-

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि । यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ॥

विसर्जन-

गच्छ गच्छ जगन्मातर्गच्छ त्वां परमेश्वरि । पूजाभागं गृहाणेमं स्वस्थाने गच्छ पूजिते ॥

श्रीसरस्वत्यै नमः । विसर्जयामि, विसर्जनार्थे अक्षतान् पुष्पं च समर्पयामि ॥

अब हाथ में अक्षत लेकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करे :

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम् । इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥

अब इन अक्षतो को गणेश जी आदि पर छोड़कर

सभी आवाहित देवताओं का भी विसर्जन कर दे।

॥ इति श्रीसरस्वती पूजन विधि ॥

श्रीयाज्ञवल्क्य कृत वाणी स्तोत्र

नारायण उवाच-

वाग्देवतायाः स्तवनं श्रूयतां सर्वकामदम् । महामुनिर्याज्ञवल्क्यो येन तुष्टाव तां पुरा ॥

गुरुशापाच्च स मुनिर्हतविद्यो बभूव ह । तदा जगाम दुःखार्तो रविस्थानं च पुण्यदम् ॥

सम्प्राप्य तपसा सूर्यं कोणार्के दृष्टिगोचरे । तुष्टाव सूर्यं शोकेन रुरोद च पुनः पुनः ॥

सूर्यस्तं पाठयामास वेदवेदाङ्गमीश्वरः । उवाच स्तुहि वाग्देवीं भक्त्या च स्मृतिहेतवे ॥

तमित्युक्त्वा दीननाथो ह्यन्तर्धानं जगाम सः। मुनिः स्नात्वा च तुष्टाव भक्तिनम्रात्मकन्धरः ॥

याज्ञवल्क्य उवाच-

कृपां कुरु जगन्मातर्मामेवं हततेजसम् । गुरुशापात् स्मृतिभ्रष्टं विद्याहीनं च दुःखितम् ॥

ज्ञानं देहि स्मृतिं देहि विद्यां विद्याधिदेवते। प्रतिष्ठां कवितां देहि शक्तिं शिष्यप्रबोधिनीम् ॥

ग्रन्थकर्तृत्वशक्तिं च सुशिष्यं सुप्रतिष्ठितम्। प्रतिभां सत्सभायां च विचारक्षमतां शुभाम् ॥

लुप्तं सर्वं दैववशान्नवीभूतं पुनः कुरु । यथाङ्कुरं भस्मनि च करोति देवता पुनः ॥

ब्रह्मस्वरूपा परमा ज्योतीरूपा सनातनी । सर्वविद्याधिदेवी या तस्यै वाण्यै नमो नमः ॥

यया विना जगत्सर्वं शश्वज्जीवन्मृतं सदा । ज्ञानाधिदेवी या तस्यै सरस्वत्यै नमो नमः ॥

यया विना जगत् सर्वं मूकमुन्मत्तवत् सदा। वागधिष्ठातृदेवी या तस्यै वाण्यै नमो नमः ॥

हिमचन्दनकुन्देन्दुकुमुदाम्भोजसंनिभा । वर्णाधिदेवी या तस्यै चाक्षरायै नमो नमः ॥

विसर्गबिन्दुमात्राणां यदधिष्ठानमेव च । इत्थं त्वं गीयसे सद्भिर्भारत्यै ते नमो नमः ॥

यया विना च संख्याता संख्यां कर्तुं न शक्यते ।

कालसंख्यास्वरूपा या तस्यै देव्यै नमो नमः ॥

व्याख्यास्वरूपा या देवी व्याख्याधिष्ठातृदेवता । भ्रमसिद्धान्तरूपा या तस्यै देव्यै नमो नमः ॥

स्मृतिशक्तिर्ज्ञानशक्तिर्बुद्धिशक्तिस्वरूपिणी । प्रतिभा कल्पना शक्तिर्या च तस्यै नमो नमः ॥

सनत्कुमारो ब्रह्माणं ज्ञानं पप्रच्छ यत्र वै। बभूव जडवत् सोऽपि सिद्धान्तं कर्तुमक्षमः ॥

तदाऽऽजगाम भगवानात्मा श्रीकृष्ण ईश्वरः । उवाच स च तां स्तौहि वाणीमिष्टां प्रजापते ॥

स च तुष्टाव त्वां ब्रह्मा चाज्ञया परमात्मनः । चकार त्वत्प्रसादेन तदा सिद्धान्तमुत्तमम् ॥

यदाप्यनन्तं पप्रच्छ ज्ञानमेकं वसुन्धरा । बभूव मूकवत् सोऽपि सिद्धान्तं कर्तुमक्षमः ॥

तदा त्वां स च तुष्टाव सन्त्रस्तः कश्यपाज्ञया । ततश्चकार सिद्धान्तं निर्मलं भ्रमभञ्जनम् ॥

व्यासः पुराणसूत्रं च पप्रच्छ वाल्मिकिं यदा। मौनीभूतः स सस्मार त्वामेव जगदम्बिकाम् ॥

तदा चकार सिद्धान्तं त्वद्वरेण मुनीश्वरः । सम्प्राप्य निर्मलं ज्ञानं प्रमादध्वंसकारणम् ॥

पुराणसूत्रं श्रुत्वा च व्यासः कृष्णकलोद्भवः । त्वां सिषेवे च दध्यौ च शतवर्षं च पुष्करे ॥

तदा त्वत्तो वरं प्राप्य सत्कवीन्द्रो बभूव ह । तदा वेदविभागं च पुराणं च चकार सः ॥

यदा महेन्द्रः पप्रच्छ तत्त्वज्ञानं सदाशिवम्। क्षणं त्वामेव सञ्चिन्त्य तस्मै ज्ञानं ददौ विभुः॥

पप्रच्छ शब्दशास्त्रं च महेन्द्रश्च बृहस्पतिम् । दिव्यं वर्षसहस्रं च स त्वां दध्यौ च पुष्करे ॥

तदा त्वत्तो वरं प्राप्य दिव्यवर्षसहस्रकम् । उवाच शब्दशास्त्रं च तदर्थं च सुरेश्वरम् ॥

अध्यापिताश्च ये शिष्या यैरधीतं मुनीश्वरैः । ते च त्वां परिसञ्चिन्त्य प्रवर्तन्ते सुरेश्वरीम् ॥

त्वं संस्तुता पूजिता च मुनीन्द्रैर्मनुमानवैः । दैत्येन्द्रैश्च सुरैश्चापि ब्रह्मविष्णुशिवादिभिः ॥

जडीभूतः सहस्रास्यः पञ्चवक्त्रश्चतुर्मुखः । यां स्तोतुं किमहं स्तौमि तामेकास्येन मानवः ॥

इत्युक्त्वा याज्ञवल्क्यश्च भक्तिनम्रात्मकन्धरः । प्रणनाम निराहारो रुरोद च मुहुर्मुहुः ॥

तदा ज्योतिःस्वरूपा सा तेन दृष्टाप्युवाच तम् ।

सुकवीन्द्रो भवेत्युक्त्वा वैकुण्ठं च जगाम ह ॥

याज्ञवल्क्यकृतं वाणीस्तोत्रमेतत्तु यः पठेत् । स कवीन्द्रो महावाग्मी बृहस्पतिसमो भवेत् ॥

महामूर्खश्च दुर्मेधा वर्षमेकं यदा पठेत् । स पण्डितश्च मेधावी सुकविश्च भवेद्ध्रुवम् ॥

॥ इति श्रीयाज्ञवल्क्य कृतं वाणी स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

सरस्वती स्तोत्र

श्वेतपद्मासना देवी श्वेतपुष्पोपशोभिता । श्वेताम्बरधरा नित्या श्वेतगन्धानुलेपना ॥

श्वेताक्षी शुक्लवस्त्रा च श्वेतचन्दनचर्चिता । वरदा सिन्धुगन्धर्वैर्ऋषिभिः स्तूयते सदा ॥

स्तोत्रेणाऽनेन तां देवीं जगद्धात्रीं सरस्वतीम् । ये स्तुवन्ति त्रिकालेषु सर्वविद्या लभन्ति ते ॥

या देवी स्तूयते नित्यं ब्रह्मेन्द्रसुरकिन्नरैः । सा ममैवाऽस्तु जिह्वाग्रे पद्महस्ता सरस्वती ॥

॥ इति सरस्वतीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

शारदा भुजंगप्रयात स्तोत्र

सुवक्षोजकुम्भां सुधापूर्णकुम्भां प्रसादावलम्बां प्रपुण्यावलम्बाम् ।

सदास्येन्दुबिम्बां सदानोष्ठबिम्बां भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥ १ ॥

कटाक्षे दयार्द्रां करे ज्ञानमुद्रां कलाभिर्विनिद्रां कलापैः सुभद्राम् ।

पुरस्त्रीं विनिद्रां पुरस्तुङ्गभद्रां भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥ २ ॥

ललामाङ्कफालां लसद्गानलोलां स्वभक्तैकपालां यशःश्रीकपोलाम् ।

करे त्वक्षमालां कनत्प्रत्नलोलां भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥ ३ ॥

सुसीमन्तवेणीं दृशा निर्जितैणीं रमत्कीरवाणीं नमद्वज्रपाणीम् ।

सुधामन्थरास्यां मुदा चिन्त्यवेणीं भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥ ४ ॥

सुशान्तां सुदेहां दृगन्ते कचान्तां लसत्सल्लताङ्गीमनन्तामचिन्त्याम् ।
स्मृतां तापसैः सर्गपूर्वस्थितां तां भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥ ५ ॥

कुरङ्गे तुरङ्गे मृगेन्द्रे खगेन्द्रे मराले मदेभे महोक्षेऽधिरूढाम् ।
महत्यां नवम्यां सदा सामरूपां भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥ ६ ॥

ज्वलत्कान्तिवह्निं जगन्मोहनाङ्गीं भजन्मानसाम्भोजसुभ्रान्तभृङ्गीम् ।
निजस्तोत्रसङ्गीतनृत्यप्रभाङ्गीं भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥ ७ ।।

भवाम्भोजनेत्राजसम्पूज्यमानां लसन्मन्दहासप्रभावक्त्रचिह्नाम् ।
चलच्चञ्चलाचारुताटङ्ककर्णां भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीशारदाभुजङ्गप्रयाताष्टकं सम्पूर्णम् ॥

गायत्रीसरस्वती स्तोत्र

काश्यप उवाच-

चतुराननगेहिन्यौ जगद्धात्र्यौ नमाम्यहम् । विद्यास्वरूपे गायत्री सरस्वत्यौ शुभे उभे ॥
सृष्टिस्थित्यंतकारिण्यौ जगतो वेदमातरौ । हव्यकव्यस्वरूपे च चंद्रादित्यविलोचने ॥
सर्वदेवाधिपे वाणी गायत्र्यौ सततं भजे । गिरिजा कमला चापि युवामेव जगद्धिते ॥
युष्मद्दर्शनमात्रेण जगत्सृष्ट्यादिकल्पनम् । युष्मन्निमेषात्सततं जगतां प्रलयो भवेत् ॥
उन्मेषात्सृष्टिरभवद्धोगायत्रि सरस्वति । युवयोर्दर्शनादद्य कृतार्थोऽभवमाशु वै ॥
मामद्य पातकान्मुक्तं स्नानात्तीर्थ द्वयेऽत्र तु । स्वीकुर्वंतु मुनिश्रेष्ठा ब्राह्मणा बांधवास्तथा ॥
इतः परं पापकृत्ये मा मे बुद्धिः प्रवर्तताम् । धर्मे प्रवर्ततां नित्यमयमेव वरो मम ॥
दीयतां भो महादेव्यौ नान्यमिच्छाम्यहं वरम् ॥

॥ इति श्रीगायत्रीसरस्वती स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अम्बुवीचिराज कृत सरस्वतीस्तोत्र

सदसद्देवि यत्किञ्चिद्बन्धमोक्षात्मकं पदम्। तत्सर्वं गुप्तया व्याप्तं त्वया काष्ठं यथाग्निना ॥

सर्वस्य सिद्धिरूपेण त्वं जनस्य हृदि स्थिता । वाचारूपेण जिह्वायां ज्योतीरूपेण चक्षुषि ॥

भक्तिग्राह्यासि देवेशि त्वमेका भुवनत्रये । शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ॥

त्वं कीर्तिस्त्वं धृतिर्मेधा त्वं भक्तिस्त्वं प्रभा स्मृता ।

त्वं निद्रा त्वं क्षुधा कीर्तिः सर्वभूतनिवासिनी ॥

तुष्टिः पुष्टिर्वपुः प्रीतिः स्वधा स्वाहा विभावरी। रतिः प्रीतिः क्षितिर्गंगा सत्यं धर्मो मनस्विनी॥

लज्जा शांतिः स्मृतिर्दक्षा क्षमा गौरी च रोहिणी ।

सिनीवाली कुहू राका देवमाता दितिस्तथा ॥

ब्रह्माणी विनता लक्ष्मीः कद्रूर्दाक्षायणी शिवा ।

गायत्री चाथ सावित्री कृषिर्वृष्टिः श्रुतिः कला ॥

बलानाडी तुष्टिकाष्ठा रसना च सरस्वती । यत्किञ्चित्त्रिषु लोकेषु बहुत्वाद्यन्न कीर्तितम् ॥

इंगितं नेंगितं तच्च तद्रूपं ते सुरेश्वरि । गन्धर्वाः किन्नरा देवाः सिद्धविद्याधरोरगाः ॥

यक्षगुह्यकभूताश्च दैत्या ये च विनायकाः । त्वत्प्रसादेन ते सर्वे संसिद्धिं परमां गताः ॥

तथान्येऽपि बहुत्वाद्ये न मया परिकीर्तिताः । आराधितास्तु कृच्छ्रेण पूजिताश्च सुविस्तरैः ॥

हरंतु देवताः पापमन्ये त्वं कीर्तिताऽपि च ॥

॥ इति श्रीअम्बुवीचिराजकृतं सरस्वतीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

सरस्वती अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र

ध्यान-

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता

या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।

या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता

सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥

अर्थात्- जो कुन्द के फूल, चन्द्रमा, बर्फ और हार के समान श्वेत हैं, जो शुभ्र वस्त्र पहनती हैं, जिनके हाथ उत्तम वीणा से सुशोभित हैं, जो श्वेत कमलासन पर बैठती हैं, ब्रह्मा, विष्णु, महेशादि देवता जिनकी सदा स्तुति करते हैं और जो सब प्रकार की जड़ता हर लेती हैं, वे भगवती सरस्वती मेरा पालन करें।

सरस्वती महाभद्रा महामाया वरप्रदा । श्रीप्रदा पद्मनिलया पद्माक्षी पद्मवक्त्रका ॥

शिवानुजा पुस्तकभृत् ज्ञानमुद्रा रमा परा । कामरूपा महाविद्या महापातकनाशिनी ॥

महाश्रया मालिनी च महाभोगा महाभुजा । महाभागा महोत्साहा दिव्याङ्गा सुरवन्दिता ॥

महाकाली महापाशा महाकारा महाङ्कुशा। पीता च विमला विश्वा विद्युन्माला च वैष्णवी॥

चन्द्रिका चन्द्रवदना चन्द्रलेखाविभूषिता । सावित्री सुरसा देवी दिव्यालङ्कारभूषिता ॥

वाग्देवी वसुधा तीव्रा महाभद्रा महाबला । भोगदा भारती भामा गोविन्दा गोमती शिवा ॥

जटिला विन्ध्यवासा च विन्ध्याचलविराजिता। चण्डिका वैष्णवी ब्राह्मी ब्रह्मज्ञानैकसाधना॥

सौदामिनी सुधामूर्तिः सुभद्रा सुरपूजिता । सुवासिनी सुनासा च विनिद्रा पद्मलोचना ॥

विद्यारूपा विशालाक्षी ब्रह्मजाया महाफला । त्रयीमूर्तिः त्रिकालज्ञा त्रिगुणा शास्त्ररूपिणी ॥

शुम्भासुरप्रमथिनी शुभदा च स्वरात्मिका । रक्तबीजनिहन्त्री च चामुण्डा चाम्बिका तथा ॥

मुण्डकायप्रहरणा धूम्रलोचनमर्दना । सर्वदेवस्तुता सौम्या सुरासुरनमस्कृता ॥

कालरात्रि: कलाधारा रूपसौभाग्यदायिनी । वाग्देवी च वरारोहा वाराही वारिजासना ॥

चित्राम्बरा चित्रगन्धा चित्रमाल्यविभूषिता । कान्ता कामप्रदा वन्द्या विद्याधरसुपूजिता ॥

श्वेतानना नीलभुजा चतुर्वर्गफलप्रदा । चतुराननसाम्राज्या रक्तमध्या निरञ्जना ॥

हंसासना नीलजङ्घा ब्रह्मविष्णुशिवात्मिका । एवं सरस्वतीदेव्या नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥

॥ इति श्रीसरस्वती अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

विद्या प्राप्ति के कुछ उपाय

इस अध्याय में हमारे द्वारा बताए गए सभी उपायों में जो स्तोत्र आदि का पाठ तथा मन्त्र जप बताया गया है उनका फल पाने के लिए उनका उपदेश लेना उनकी दीक्षा लेना अत्यन्त आवश्यक है तभी वे फलप्रद होंगे अन्यथा नहीं। उपदेश/दीक्षा उपरांत भी इन सभी उपायों को करते समय सूर्योदय से पूर्व जागरण, उचित वस्त्र, ब्रह्मचर्य आदि नियमों का पालन अति आवश्यक है बिना नियमों का पालन करे, स्वेच्छाचार करते हुए पाठ अथवा जप करने से पूर्ण फल प्राप्त नहीं होगा, अतः नियमों से रहते हुए ही सकाम प्रयोग करें। नारायण..

१. नारद पुराण में वर्णित सङ्कष्टनाशन गणेश स्तोत्र को भोजपत्र पर रक्तचंदन अथवा कुंकुम से लेखनी द्वारा लिखकर आठ ब्राह्मणों को समर्पित करने से विद्या प्राप्त होती है।

२. ब्रह्मवैवर्त पुराण में वर्णित बाणासुर रचित शिव स्तोत्र का एक मास भर श्रवण करने से मूर्ख भी बस गुरु के उपदेश मात्र से बुद्धि तथा विद्या प्राप्त कर लेता है।

३. स्कन्द महापुराण में वर्णित शिव अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र के पाठ से भी विद्या प्राप्ति कही गई है।

४. याज्ञवल्क्य कृत वाणी स्तोत्र का पाठ करने से व्यक्ति बृहस्पति जी के समान हो जाता है। अगर कोई महामूर्ख भी एक वर्ष तक इस स्तोत्र का पाठ करे तो वह भी पण्डित, मेधावी तथा सुकवि हो जाता है।

५. बालराम स्तवराज का पाठ करने से व्यक्ति ६ मास में सरस्वती प्राप्त कर लेता है।

६. नित्य हनुमान चालीसा के ७ पाठ करने से विद्या प्राप्त होती है। (उपदेश आवश्यक नही)

७. ४० दिवसों तक नित्य ४० बार "जनकसुता जग जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुनानिधान की॥ ताके जुग पद कमल मनावउँ। जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ॥" इस मानस गायत्री का जप करने से विद्या प्राप्ति होती है। (उपदेश आवश्यक नही)

८. नित्य ही नौ अथवा एक माला "गुरगृहँ गए पढ़न रघुराई। अलप काल बिद्या सब आई॥" इसका जप करने से शीघ्र ही विद्या प्राप्त होती है। (उपदेश आवश्यक नही)

९. नित्य प्रातःकाल कार्तिकेय जी के प्रज्ञाविवर्धन स्तोत्र का पाठ करने से महाप्रज्ञा की प्राप्ति होती है।

१०. नित्य सूर्योदय के समय महाभारत में वर्णित सूर्य अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र के पाठ से भी मेधा की प्राप्ति होती है।

११. पद्म पुराण में वर्णित वेदव्यास कृत गणेशाष्टक का पाठ करने वाला लक्ष्मी सहित सरस्वती प्राप्त करता है।

१२. गणेश पुराण में वर्णित गणेशाष्टक का २१ बार पाठ करने से विद्या प्राप्त होती है।

१३. ब्रह्म पुराण में वर्णित वाल्मीकि कृत गणेश कव्याष्टक का पाठ करने से कवित्व प्राप्त होता है।

१४. हयग्रीव नाम के जप से अति शीघ्र विद्या प्राप्त होती है।

१५. विद्या चाहने वाला व्यक्ति नित्य ही गौ को प्रणाम कर, गौ दुग्ध का पान कर "विद्यादात्र्यै गवे नमः" इस मन्त्र का जप कर फिर अध्ययन करे तो वह ज्ञानवान होता है।

इनमें से जो भी प्रयोग आप करते हैं उसे श्रद्धा से सम्पन्न होकर करें, क्योंकि शास्त्र में कहा गया है : मंत्रे तीर्थे द्विजे देवे वैद्येऽथ गणके गुरौ। यादृशी भावना स्वीया सिद्धिर्भवति तादृशी ॥ अर्थात्- मंत्र में, तीर्थ में, ब्राह्मण में, वैद्य में, देवता में, ज्योतिष में तथा गुरु में जिसकी जैसी भावना रहती है, उसको वैसा ही फल प्राप्त होता है।। (आनन्द रामायण, मनोहरकाण्ड, सर्ग छह, श्लोक २२७) अतः जैसी आपकी श्रद्धा होगी वैसा ही फल आपको प्राप्त होगा।। नारायण..

॥ इति श्री ॥

देवी सरस्वती ब्रह्मा जी की पत्नी हैं अथवा भगवान् श्रीहरि की ?

श्रीहरि नारायण भगवान् की तीन पत्नियाँ थीं, देवी लक्ष्मी, देवी गंगा तथा देवी सरस्वती। वे इन तीनों देवियों के सहित अपने वैकुंठ धाम में वास करा करते थे विशेष कारण वशात् भगवान् ने सरस्वती जी और गंगा जी का त्याग कर दिया जिसके कारण उन दोनों को क्रमशः ब्रह्मा जी तथा शिव जी की पत्नी बनना पड़ा। पुस्तक के इस अध्याय में हम आपको इस पौराणिक घटना की कथा का ही विवरण देंगे जिससे पाठक वृन्द को स्पष्ट हो जाएगा कि भगवती श्रीसरस्वती जी भगवान् श्रीहरि नारायण जी की पत्नी हैं अथवा लोकस्रष्टा श्रीब्रह्मा जी की।

॥ अथ कथा ॥

धर्म देवता के पुत्र, नर के भ्राता, भगवान् श्रीहरि के अवतार ऋषि श्रीनारायण जी श्रीनारद जी से कहते हैं- हे मुनिवर ! सरस्वती नारायण के पास रहा करती थीं, एक बार वैकुण्ठधाम में सरस्वती की गंगा से कलह हो गई फिर वे गंगा के शाप के कारण अपने कलारूप से भारत में नदीरूपा हो गयीं। हे मुनिप्रवर ! ये पुण्यप्रदा, पुण्य को उत्पन्न करने वाली, पवित्र तीर्थरूपा हैं। पुण्यात्मा लोग निरन्तर इनकी पूजा करते हैं। वे पुण्यात्माओं हेतु स्थितिरूपा हैं। वे तपस्वियों के लिये तपोरूपा हैं। ये ही मूर्त्तिमती तपस्या हैं। वे मनुष्यों द्वारा आचारित पापराशि का दहन करने वाली अद्वितीया अग्नि हैं। जो लोग सरस्वती तट पर ज्ञानतः प्राणत्याग करते हैं, वे चिरकाल पर्यन्त वैकुण्ठधाम में श्रीहरि की सभा में नित्य निवास करते हैं। इस भारत में पापी लोग सरस्वती जल में स्नान करके सर्वपातक समूह से मुक्तिलाभ करते हैं तथा चिरकाल तक विष्णुलोक में निवास करते हैं। चतुर्दशी, पूर्णिमा, अक्षय तृतीया, दक्षिणायन, व्यतीपात योग में, ग्रहण में तथा अन्य पुण्यकाल के दिन यदि कोई व्यक्ति अवहेलना से ही सही, किंवा सश्रद्धभाव से ही सही अथवा खेल-खेल में ही सही, सरस्वती जल में स्नान करता है, तो वह वैकुण्ठ में भगवान् के सारूप्य को प्राप्त करता है। जो मनुष्य एक मास पर्यन्त नित्य सरस्वती मन्त्र जपता है, वह महामूर्ख होने पर भी कविकुल चूड़ामणि हो जाता है, इसमें कोई सन्देह नही। जो व्यक्ति सरस्वती नदी के तट पर मुण्डन कराकर स्नान करता है, उसे पुनः गर्भ में नहीं

आना पड़ता। इस प्रकार मैंने सुखदान करने वाली मोक्ष की सारभूता भारती सरस्वती के किंचित् गुणों को कह दिया। अब क्या सुनने की कामना है ? **सौति कहते हैं-** नारायण का यह वाक्य सुन कर मुनिसत्तम नारद ने अपना संदेह-भंजन करने हेतु प्रश्न किया। **देवर्षि नारद बोले-** हे प्रभो ! देवी सरस्वती ने कलह के कारण, गंगा के शाप के कारण अपने सोलहवें अंश से पवित्रताप्रदा नदीरूप धारण कर लिया। तब वे अवतरित कैसे हो सकीं? यह सारभूत श्रवणयोग्य वचन सुनकर मेरा कुतूहल बढ़ता जा रहा है। यह अमृततुल्य कथा सुनने से मेरी तृप्ति ही नहीं हो रही है। श्रेयप्राप्ति से कौन तृप्त हो सकता है ? शान्तस्वभावा, सत्वरूपा, पुण्यप्रदा, सर्वदात्री गंगा तो जगत्पूजिता हैं। उन्होंने परमपूज्या सरस्वती को शाप क्यों दिया ? इन दोनों तेजस्विनी देवीगण के बीच सुनने में सुन्दर पुराणदुर्लभ कलह का क्या कारण था ? यह सब मुझ पर कृपा करके कहिये। **श्रीनारायण कहते हैं-** हे नारद ! जिसके स्मरणमात्र से ढेरों पाप दूर हो जाते हैं, वह प्राचीन कथा कहता हूं, श्रवण करो। लक्ष्मी, सरस्वती और गंगा ये श्रीहरि की तीन पत्नियां हैं। ये प्रेमपाश में आबद्ध होकर नित्य श्रीहरि के पास रहती हैं। एक समय गंगा ने अभिलाषा करके (सकामा होकर) हँसते हुए पुनः-पुनः हरि को कटाक्षपूर्ण दृष्टि से कई बार देखा। इस समय श्रीहरि भी गंगा का मुख देखकर आनंदित होते कुछ हँसे। यह भाव देख कर देवी लक्ष्मी ने तो क्षमा कर दिया परन्तु यह देवी सरस्वती के लिये असह्य हो उठा। तब सत्वरूपा सहास्यमुख वाली लक्ष्मी ने सरस्वती से विशेष रूप से प्रबोध वाक्य कहा, परंतु तब भी क्रोधपरवशा सरस्वती शान्त नहीं हो सकीं। क्षणकाल में ही उनका मुख तथा नेत्र लाल हो उठा, शरीर एवं अधर कोप से काँपने लगे। उन्होंने क्रोधित होकर गंगा तथा अपने स्वामी श्रीहरि से कहा यदि स्वामी सतत् धार्मिक, श्रेष्ठ है, तब अपनी स्त्रियों के प्रति उसको समत्वरूप बुद्धि होती है, तथापि यदि स्वामी दुष्ट है, तब उसकी बुद्धि समत्वमय न होकर विपरीत होती है। हे प्रभो ! गदाधर ! मुझे पता है कि आपका गंगा के प्रति अधिक प्रेम है। लक्ष्मी के प्रति भी वैसा ही प्रेम है। मेरे प्रति आपका प्रेम तनिक भी नही है। आपका प्रेम लक्ष्मी के प्रति अधिक है, तभी लक्ष्मी ने गंगा का यह भाव देख कर भी उसे क्षमा कर दिया। मैं नितान्त दुर्भगा हूँ। मेरे जीवन का क्या प्रयोजन रह गया ? जो नारी पति प्रेम से वंचित है, उसका जीवन धारण ही निष्फल है। जो मनीषी आपको देख कर सत्वरूप कहते हैं, वे नितान्त मूर्ख हैं, वेदधर्म तथा आपकी बुद्धिवृत्ति को जान ही नहीं पाते। सरस्वती का यह क्रोध देख कर तथा उनका यह कथन सुनकर नारायण ने मन ही मन विचार किया तथा वे सभा से बाहर चले

गये। नारायण देव के वहां से बाहर जाते ही वाणी की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती अत्यन्त निर्भय हो गयीं। वे अब सुनने में कठोर वाक्यों से गंगा से कहने लगीं- हे निर्लज्जे ! कामयुक्ते ! तुम स्वामी का गर्व क्यों करती हो ? क्या तुम अपना पति सौभाग्य दिखलाना चाहती हो ? आज मैं विष्णु के सामने तुम्हारी मानहानि करूँगी। तुम स्वयं को पति की अत्यन्त प्रिया मानती हो, अब मुझे यह देखना है कि हरि तुम्हारा क्या बचाव करते हैं। यह कहने के उपरान्त सरस्वती गंगा का केश पकड़ने लगीं, तब उस समय लक्ष्मी ने बीच में आकर उनको रोक दिया। तभी सरस्वती ने क्रोध पूर्वक लक्ष्मी को शाप दिया "तुमने ऐसा विपरीत भाव दिखलाया तथा किसी से कुछ बोले बिना तुम सभा में वृक्ष तथा नदी के समान निर्वाक् होकर अवस्थित हो, तब तुम निश्चय ही वृक्ष एवं नदी हो जाओगी। तुम निर्वाक् (वाणी रहित) रहोगी। यह शाप सुनकर भी कमला (लक्ष्मी) ने क्रोध नहीं किया तथा प्रतिशाप भी नहीं दिया। वे सरस्वती का हाथ पकड़े वहीं अवस्थित हो गईं। पद्मलोचना गंगा ने सरस्वती का यह उग्रभाव देख कर कोप से फड़फड़ाते हुए मुख से लक्ष्मी से कहा– हे लक्ष्मी ! कमले ! भद्रे ! तुम इस उग्रस्वभावा सरस्वती के हाथों को छोड़ दो। यह वाणी की अधिष्ठात्री कलहप्रिया, दुष्ट वाक्य बोलने वाली देवी मेरा कुछ भी अहित नहीं कर सकती। इस दुर्बुद्धि की जितनी भी शक्ति तथा क्षमता है उससे यह मुझसे विवाद करे। यह आज अपनी तथा मेरी शक्ति को लोक में प्रकट करने की इच्छा कर रही है। हे सती कमले (लक्ष्मी) ! आज सब लोग हम दोनों के प्रभाव तथा पराक्रम को जानें। यह कहकर देवी गंगा ने वाणी (सरस्वती) को शाप दिया जिसने क्रोध में भर कर लक्ष्मी को शाप दिया है, वह स्वयं नदी रूप होकर मर्त्यलोक में पापीगण के समूह के निकट रहे तथा कलिकाल में उन पातकी लोगों के पापांश को भी स्वयं प्राप्त करे। इसमें कोई सन्देह नहीं होगा। गंगा देवी का यह शाप सुनकर सरस्वती ने गंगा को यह प्रतिशाप प्रदान किया कि तुम भी नदी होकर पृथिवी पर जाओ। तुमको भी वहां पापी लोगों का पापभार वहन करना होगा। इसी अवसर पर वहां चतुर्भुज भगवान् नारायण अपने चतुर्भुज पार्षदों के साथ आ गये। उन्होंने सरस्वती की बाँह पकड़ कर उनको अपने वक्षःस्थल से लगाया। तदनन्तर सर्वज्ञ नारायण ने उनको सभी पुरातन ज्ञान द्वारा प्रबोधित किया। तभी उनके बीच हो रही कलह तथा शाप के गूढ़ विषय को सुनकर सभी दुःखी हो गये। उस समय भगवान् विभु नारायण समयोचित बातें कहने लगे। **भगवान् श्रीहरि नारायण कहते हैं-** हे शुभे लक्ष्मी ! तुम पृथिवी पर कलारूप से धर्मध्वज के गृह में जाकर वहां अयोनिजा कन्या के रूप में अवतीर्ण हो जाओ।

दैवदुर्विपाक से उस धर्मध्वज राजा के घर में तुम वृक्षरूपा हो जाओगी फिर मेरे अंश से उत्पन्न शंखचूड़ असुर की पत्नी होने के पश्चात् तुम पुनः मेरी पत्नी हो जाओगी। भारत में तुम्हारा नाम त्रैलोक्य पावनी तुलसी के रूप में प्रसिद्ध होगा। हे वरानने लक्ष्मी ! तुम सरस्वती के शाप प्रभाव से अपने अंश से नदीरूप धारण करके भारतभूमि जाओ तथा वहां पद्मावती नाम से अवतीर्ण हो जाओ। हे गंगे ! तुम भी सरस्वती के शाप के कारण अंशरूपेण विश्वपावनी नदी होकर देहधारी लोगों की पापराशि भस्मसात् करने के लिये भारत में अवतीर्ण होगी। भगीरथ कठोर तपस्या के बल से तुमको भूतल पर अवतीर्ण करेंगे। इसीलिये तुम्हारा पवित्र नाम भागीरथी घरती पर प्रसिद्ध हो जायेगा। हे प्रिये सुरेश्वरी ! तुम मेरी आज्ञा से पृथिवी पर जाकर मेरे अंशभूत समुद्र से मिलोगी तथा मेरे अंश के भी अंश से उत्पन्न शान्तनु नामक राजा की पत्नी होकर कुछ समय अवस्थित रहोगी। हे भारती सरस्वती ! तुम सपत्नियों से कलह करने का परिणाम गंगा के शाप के कारण भोगो, तत्पश्चात् स्वयं ब्रह्मा के यहां जाकर उनकी पत्नी हो जाओ। हे लक्ष्मी ! हे पद्मे ! तुम यहीं वैकुण्ठ में ही निवास करो। तुम शान्त स्वभाव की हो। तुम क्रोध रहित, मेरी भक्ति में तत्पर, सुशील तथा धार्मिक हो। समस्त जगत् में जो स्त्रियाँ तुम्हारे अंश से उत्पन्न होंगी, वे धार्मिक, पतिव्रता, शान्त स्वभावा तथा सुशीला होंगी। किसी भी गृहस्थ की तीन पत्नी होना वेदविरुद्ध है। इसी प्रकार तीन घर, तीन नौकर, तीन भाई सर्वदा अशुभ होते हैं। जिसके घर में स्त्री पुरुष के समान तथा पुरुष स्त्री के समान है, अर्थात् पुरुष स्त्री के वश में है (तथा स्त्री ही सर्वाधिकार सम्पन्न स्वामीवत् है) उस पुरुष का जीवन निष्फल है। उसका प्रति पग पर अमंगल होता है। जिसकी पत्नी कटुभाषिणी, व्याभिचारिणी, कलहप्रिया है, उस पुरुष के लिये अच्छा है कि वन में रहे, क्योंकि उसका घर तो वन से भी भयंकर है। अरण्य में तो जल, निवास की जगह, फलादि सब मिल जाता है, लेकिन ऐसी दुष्ट वाणी वाली नारी से युक्त घर में कुछ भी नहीं मिलता। ऐसी दुःखप्रदा दुष्टा नारी के पास रहने से अग्नि में रहना अथवा हिंसक जन्तुगण के बीच में रहना उत्तम है, यह निश्चित है। हे सुमुखी ! पुरुष रोगयन्त्रणा तथा विष की यन्त्रणा तो सह लेता है, तथापि दुष्टा नारी की वाक्ययन्त्रणा तो मृत्युजनित यन्त्रणा से भी भयानक है। जो पुरुष नारी से पराजित हो गया, उसका जीते रहना व्यर्थ है। यत्न से वह चाहे कोई कार्य क्यों न करे, उसे कोई फल नहीं मिलता। वह सर्वत्र निन्दाभाजन तथा परलोक में भी नरकगामी होता है। यश रहित एवं कीर्त्ति रहित व्यक्ति का जीवित रहना तो मरणतुल्य है। अनेक सौतों का एक स्थान पर रहना उचित नहीं है। लोग एक

पत्नी रहने पर भी सुखी नहीं हो पाते, अतः अनेक पत्नी वाला कदापि सुखी नहीं होता, इसमें क्या सन्देह ?। हे गंगे ! तुम शिव सान्निध्य में जाओ। हे सरस्वती ! ब्रह्मा के पास जाओ। लेकिन सुशीला लक्ष्मी मेरे ही पास रहेगी। जिसकी पत्नी उसके वश में है, सुशीला तथा पतिव्रता है, इहलोक में उसे स्वर्गीय सुखलाभ होता है। परलोक में उसे धर्म एवं मोक्ष मिलता है। जिसकी पत्नी पतिव्रता है, वह महात्मा सर्वदा मुक्त, पवित्र, सुखी है। जो व्यक्ति दुःशीला पत्नी का पति है, वह सदा अपवित्र, दुःखी, जीते जी मृतकवत् है। हे नारद ! यह कहकर जगत्स्वामी विष्णु मौन हो गये। अब वे देवियां गंगा तथा सरस्वती परस्परतः एक-दूसरे से लिपट कर रुदन करने लगीं। वे भविष्य के विषय में बातचीत करने लगीं। वे भय एवं शोक से काँपती हुई साश्रुनयन होकर नारायण से क्रमशः कहने लगीं। **भगवती सरस्वती कहती हैं-** हे नाथ ! मैं नितान्त दुष्टस्वभावा हूं। अत: आप कृपया मुझे जन्म को शुद्ध करने वाला प्रायश्चित्त बतायें। संसार की ऐसी कौन स्त्री है, जो उत्तम स्वभाव युक्त पति द्वारा त्याज्य होकर जीवित रह सके ? मैं भारत में योगावलम्बन द्वारा निश्चित रूप से देह त्याग कर दूंगी। जो अत्यन्त ऊंचाई पर चढ़ता है, उसका शीघ्र गिरना निश्चित ही है। **देवी गंगा कहती हैं-** हे जगत्पति ! मुझे किस अपराध के कारण आपने त्यागा है ? मैं निश्चित रूप से देहत्याग करूंगी, इससे आप निरपराधिनी की हत्या के भागी होंगे। इस संसार में जो व्यक्ति निर्दोष स्त्री का त्याग करता है, वह कल्पान्त पर्यन्त नरकभोग करता है। यद्यपि आप सर्वेश्वर हैं, तथापि आपको भी फल तो भोगना ही होगा। **देवी लक्ष्मी कहती हैं-** हे नाथ ! आप सत्वरूप हैं। आपमें क्रोध उत्पन्न होना अत्यन्त आश्चर्य की बात है! आप पत्नियों के प्रति कृपा करिये, क्योंकि सत्स्वाम सदा पत्नी पर कृपा कर देते हैं। हे नाथ ! आपने सरस्वती को ब्रह्मा के पास तथा गंगा को शिव के पास जाने का आदेश तो दे दिया है, तथापि कृपा करके उनको क्षमा करिये। ऐसा मत कहिये कि वे दोनों ब्रह्मा तथा शिव के यहां जायें। यह कहकर कमला ने अपने पति नारायण का चरण पकड़ कर प्रणाम किया तथा अपने केशों को उनके चरणों में लिपटाकर वे पुनः पुनः रुदन करने लगीं। तब भक्तों पर अनुग्रह करने के लिये कातर पद्मनाभ भगवान् विष्णु ने लक्ष्मी को वक्ष से लगाया तथा वे प्रसन्नता पूर्वक तनिक हँसते हुए कहने लगे- हे सुरेश्वरी! तुम्हारे अनुरोध का पालन करते हुए मुझे यह देखना होगा कि मेरा वाक्य भी विफल न हो। अतः हम दोनों के कथन की समभाव से रक्षा हो, उसका प्रतिविधान करता हूं, श्रवण करो। सरस्वती अपने अंश से नदीरूप धारण करेंगी तथा उनका आधा अंश ब्रह्मा के पास जायेगा। वे पूर्ण अंश से मेरे यहां

ही निवास करें। इसी प्रकार गंगा भी भगीरथ द्वारा लाई जाकर त्रिभुवन को पवित्र करने हेतु अंश रूप से भारत में अवतीर्ण हो जायें। वे पूर्णांश से मेरे पास रहें। वहां गंगा को चन्द्रशेखर भगवान् श्रीशंकर जी का दुर्लभ शिर प्राप्त होगा। श्रीशिव जी के शिर पर गिरते हुए वे पहले से पवित्र होने पर भी और अधिक पवित्र हो जायेंगी॥

इस प्रकार गंगा जी से कलह करने के कारण भगवती सरस्वती को अपने अंश से ब्रह्मा जी की पत्नी होना पड़ा, अतः भगवती श्रीसरस्वती जी अपने पूर्ण रूप से भगवान् श्रीहरि नारायण जी की पत्नी हैं और अंश रूप से श्रीब्रह्मा जी की। यह कथा श्रीब्रह्मवैवर्त महापुराण के प्रकृति खण्ड के अध्याय छह में वर्णित है॥

॥ इति श्री ॥

सारस्वतों के लिए पालनीय नियम

शारदातिलक, पटल ७ अनुसार

आम्रातं गृञ्जनं बिल्वं करञ्जं लशुनन्तथा।

तैलं पलाण्डुं पिण्याकं शार्गाष्टमपि भोजने॥

सर्वं पर्युषितं त्याज्यं सदा सारस्वतार्थिना।

नाचरेन्निशि ताम्बूलं स्त्रियं गच्छेद्दिवा न च॥

न सन्ध्ययोः स्वपेज्जातु नाशुचिः किञ्चिदुच्चरेत्।

प्रदोषेषु भवेन्मौनी दिग्वस्त्रां न विलोकयेत्॥

न पुष्पितां स्त्रियं गच्छेन्न निन्देद्वामलोचनाम्।

न मृषा वचनं ब्रूयान्नाक्रामेत् पुस्तकं सुधीः॥

अक्षराढ्यानि पत्राणि नोपेक्षेत् न लङ्घयेत्।

चतुर्दश्यष्टमीपर्व प्रतिपद्ग्रहणेषु च॥

संक्रमेषु च सर्वेषु विद्यां नैव पठेद् बुधः।

व्याख्याने सन्त्यजेन्निद्रामालस्यं जृम्भनं पुनः॥

क्रोधं निष्ठीवनं तद्वन्नीचाङ्गस्पर्शनन्स्तथा।

मनुष्यसर्पमार्जारमण्डूकनकुलादयः॥

अन्तरा यदि गच्छेयुस्तदा व्याख्यां परित्यजेत्।

निशासु दीपभ्रंशे च सद्यः पाठं परित्यजेत्॥

ज्ञात्वा दोषानिमान् सम्यक् भक्त्या यो भारतीं भजेत्।

वाचां सिद्धिमवाप्नोति वाचस्पतिरिवापरः॥

अर्थात्- सरस्वती प्राप्ति की इच्छा रखने वाला व्यक्ति आम्रात, बिल्वफल, करञ्ज, गृञ्जन, लहसुन, तिल का तेल, प्याज, तिल का भूसा, सिंघाड़ा और सभी बासी पदार्थों का भोजन में त्याग करे। सरस्वती पाने की कामना वाला व्यक्ति सायंकाल के बाद ताम्बूल, दिन में मैथुन, दोनों सन्ध्याओं में शयन, अपवित्रभाषण आदि का भी त्याग करे। वह प्रदोष में मौन रखे, नग्न स्त्री को न देखे, स्त्री के रजस्वला काल में(जब तक रजस्राव चालू रहे तब तक) सहवास न करे, स्त्री जाति की निन्दा न करे/सुंदर स्त्री पर व्यंग न करें, झूँठ न बोले, पुस्तक को न फेंके, किसी भी भाषा में लिखे हुए संवाद पर न बैठे, उनका लङ्घन न करे **("मंत्राणां मातृका देवी" = अ से क्ष पर्यन्त के अक्षर मातृकामंत्र हैं। "शब्दानां ज्ञान रूपिणी" सारे शब्द ज्ञान सूचक हैं। देव्यऽथर्वशीर्ष)** किसी भी पुस्तक को या लेखन को पैर न लगाए, पुस्तक सीधे जमीन न रक्खे अपितु उसे किसी आसन पर रखकर अभ्यास करे, पैर फैलाकर अभ्यास न करे, जूठे हाथ से पुस्तकादि का स्पर्श न करे। सारस्वत जन चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस-पूर्णिमा, प्रतिपदा, ग्रहणकाल और संक्रात में पठन-पाठन न करे, पढते समय निद्रा का तथा आलस्यता का त्याग करे। अध्ययन के समय वह थूँकने, जम्भाई लेने, क्रोध करने तथा शरीर के निचले अंगों का स्पर्श करने का त्याग करे। मनुष्य, साँप, बिल्ली, मेंढक अथवा नेवला अगर अभ्यास के समय गुरु-शिष्य के मध्यसे निकल जाएं तो तुरंत एक मुहूर्त पर्यन्त अभ्यास रोक दें। रात्रिकाल में तथा अँधेरे में भी पठन न करें। इन दोषों को जानकर जो मनुष्य स्थिरता से सरस्वती का सेवन करता है वह वाक्सिद्धि प्राप्त करके बृहस्पति जी के समान हो जाता है॥

॥ इति श्री ॥

सरस्वती पूजन में अर्पण योग्य वस्तुएँ

श्रीमद्देवीभागवत महापुराण, स्कन्ध ९, अध्याय ४

नवनीतं दधि क्षीरं लाजांश्च तिललड्डुकम् । इक्षुमिक्षुरसं शुक्लवर्णं पक्वगुडं मधु ॥

स्वस्तिकं शर्करां शुक्लधान्यस्याक्षतमक्षतम्।

अच्छिन्नशुक्लधान्यस्य पृथुकं शुक्लमोदकम् ॥

घृतसैन्धवसंयुक्तं हविष्यान्नं यथोदितम् । यवगोधूमचूर्णानां पिष्टकं घृतसंयुतम्॥

पिष्टकं स्वस्तिकस्यापि पक्वरम्भाफलस्य च । परमान्नं च सघृतं मिष्टान्नं च सुधोपमम् ॥

नारिकेलं तदुदकं कसेरुं मूलमार्द्रकम् । पक्वरम्भाफलं चारु श्रीफलं बदरीफलम् ॥

कालदेशोद्भवं चारु फलं शुक्लं च संस्कृतम्। सुगन्धं शुक्लपुष्पं च सुगन्धं शुक्लचन्दनम्

नवीनं शुक्लवस्त्रं च शङ्खं च सुन्दरं मुने ।

माल्यं च शुक्लपुष्पाणां शुक्लहारं च भूषणम्॥

भगवती सरस्वती जी के पूजन में उनकी प्रसन्नता के लिए भक्त को उनको मक्खन, दही, दूध, धान का लावा, तिल का लड्डू, सफेद गन्ना, गन्ने का रस, उसे पकाकर बनाया हुआ गुड़, मधु, स्वस्तिक, शक्कर, सफेद धान का बिना टूटा हुआ चावल, बिना उबाले हुए श्वेत धान का चिउड़ा, सफेद लड्डू, घी और सेंधा नमक डालकर बनाया गया शास्त्रोक्त हविष्यान्न, जौ अथवा गेहूँ के आटे से घृत में तले हुए पदार्थ, स्वस्तिक तथा पके हुए केले का पिष्टक, उत्तम अन्न को घृत में पकाकर उससे बना हुआ अमृततुल्य मधुर मिष्टान्न, नारियल, नारियल का जल, कसेरु, मूली, अदरक, पका हुआ केला, सुन्दर बेल, बेर का फल, देश और काल के अनुसार उपलब्ध सुन्दर, श्वेत और पवित्र ऋतुफल, सुगन्धित श्वेत पुष्प, सुगन्धित श्वेत चन्दन, नवीन श्वेत वस्त्र तथा सुन्दर शंख, श्वेत पुष्पों की माला, श्वेत वर्ण का हार तथा आभूषण समर्पित करने चाहिये ॥

॥ इति श्री ॥

सरस्वती पूजन की परंपरा

ब्रह्मवैवर्त महापुराण, प्रकृति खण्ड, अध्याय ४

ऋषि नारायण नारद जी से कहते हैं- प्रथमतः सरस्वती की पूजा श्रीकृष्ण ने प्रवर्तित करी थी, इस पूजा के प्रभाव से मूर्ख भी पण्डित हो जाता है। **श्रीकृष्ण देवी सरस्वती से कहते हैं-** ये प्रत्येक विश्व में माघमासीय शुक्ला पञ्चमी तिथि के दिन तथा विद्यारंभ में मानवगण, मनुगण, देव, मुनिगण, मुमुक्षुगण, योगी, सिद्ध, नाग, गन्धर्व तथा किन्नरगण मेरे वर के प्रभाव से प्रलयकाल तक कल्प-कल्प में भक्तियुक्त होकर तुम्हारी पूजा षोडशोपचार से करेंगे। जितेन्द्रिय संयमी लोग घट तथा पुस्तक में काण्वशाखोक्त विधि से तुम्हारा ध्यान तथा पूजन करेंगे। वे स्वर्णमय गुटिका बना कर उसकी गन्ध तथा चन्दन से अर्चना करके दाहिने हाथ पर तुम्हारा कवच धारण करेंगे। हे पूजनीये ! पण्डितगण पूजाकाल में तुम्हारा स्तवपाठ भी करेंगे। यह कहने के पश्चात् भगवान् श्रीकृष्ण ने ने सर्वपूजिता भगवती सरस्वती का की पूजन करा। इसके पश्चात् ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव ने भी उनका पूजन किया। तदनन्तर इसी प्रकार अनन्त देव, धर्म, मुनिगण, सनकादि ब्रह्मपुत्रगण, देवगण, मनुगण, राजाओं तथा मनुष्यों ने भी देवी सरस्वती का पूजन किया। इस प्रकार से नित्यरूपा सरस्वती सभी लोको में पूज्या हो गयीं॥

॥ इति श्री ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः

श्रीशारदार्पणमस्तु

पुनि बंदउँ सारद सुरसरिता। जुगल पुनीत मनोहर चरिता॥
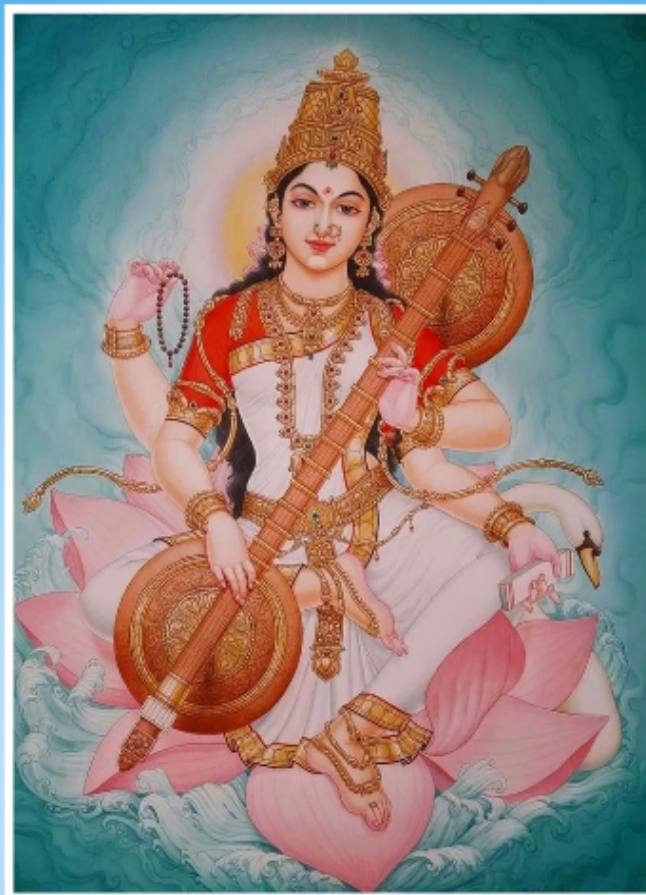
हमारे ग्रन्थों का विवरण :

श्रीरामार्चन सर्वस्वम्
श्रीसीतार्चन सर्वस्वम्
श्रीआञ्जनेयार्चन सर्वस्वम्
श्रीसरस्वत्यर्चन सर्वस्वम्

ग्रन्थ प्राप्ति के लिए सम्पर्क सूत्र : 8303317498

मज्जन पान पाप हर एका। कहत सुनत एक हर अबिबेका॥